

Important Questions Class 8 Hindi Chapter 7 यह सबसे कठिन समय नहीं

प्रश्न-1 साधु से क्या पूछना चाहिए?

उत्तर – साधु से ज्ञान की बातें पूछनी चाहिए।

प्रश्न-2 घास कब कष्टप्रद बन जाती है?

उत्तर – घास कष्टप्रद तब बन जाती है जब घास का सूखा तिनका आँख में चला जाता है।

प्रश्न:3 जाति के बारे में क्या प्रश्न हैं और उत्तर क्या है?

उत्तर: यह दोहे कहते हैं कि ज्ञान के आधार पर जाति का मोलभाव नहीं किया जाना चाहिए। ज्ञान के आधार पर अन्तर्निहित स्वभाव और गुणों का महत्व होना चाहिए।

प्रश्न: 4 कबीर के द्वारा उल्टे हुए जग में क्या संदेश है?

उत्तर: यह दोहा कहता है कि जगत में अनेकता है, लेकिन सच्चे ज्ञानी में उलटे नहीं होते हैं, वे एक ही होते हैं।

प्रश्न: 5 जीभ, मुँह और मन के सम्बन्ध में कबीर का क्या कहना है?

उत्तर: यह दोहा कहता है कि माला में बाजारी घूमती है, जीभ मुँह में घूमती है, मनुष्य अपने दिल के दर्शन के लिए घूमता है, लेकिन उसे समर्पित ध्यान नहीं होता।

प्रश्न: 6 कबीर का कहना कि नींद के बारे में क्या सोचना चाहिए?

उत्तर: यह दोहा कहता है कि कबीर कहते हैं कि जो व्यक्ति नींद में सोते समय भी अपने आप को सच्चे और जागृत महसूस करता है, वही सच्चा जागरण है।

प्रश्न: 7 कबीर के इस दोहे का संदेश क्या है जो दया करने के बारे में कहा गया है?

उत्तर: यह दोहा कहता है कि जगत में कोई बेहतर व्यक्ति नहीं है जो दूसरों के प्रति दया रखता है और सबका सम्मान करता है। दया करना सबके लिए महत्वपूर्ण है।

प्रश्न- 8 “या आपा को डारि दे, दया करै सब कोय।”

“ऐसी बानी बोलिए मन का आपा खोय।”

इन दोनों पंक्तियों में ‘आपा’ को छोड़ देने या खो देने की बात की गई है। ‘आपा’ किस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है? क्या ‘आपा’ स्वार्थ के निकट का अर्थ देता है या घमंड का?

उत्तर – यहाँ ‘आपा’ अहंकार के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। ‘आपा’ घमंड का अर्थ देता है।

प्रश्न- 9 मनुष्य के व्यवहार में ही दूसरों को विरोधी बना लेने वाले दोष होते हैं। यह भावार्थ किस दोहे से व्यक्त होता है?

उत्तर – जग में बैरी कोइ नहीं, जो मन सीतल होय।

या आपा को डारि दे, दया करै सब कोय।।

प्रश्न-10 कबीर के दोहों को साखी क्यों कहा जाता है? ज्ञात कीजिए।

उत्तर – साखी शब्द संस्कृत के शब्द साक्षी का तदभव रूप है। इसका अर्थ है – प्रमाण। साखी में जीवन मूल्य तथा सत्य चित्रण किया गया है। कबीर ने अपने अनुभवों को दोहों के रूप में कहा है। प्रामाणिक होने के कारण ही कबीर के दोहों को साखी कहा जाता है।

प्रश्न-11 कबीर के सखियाँ हमें क्या संदेश देती हैं?

उत्तर – कबीर के सखियाँ हमें यह संदेश देती हैं कि हमें साधु से उनकी जाति न पूछ कर उनसे ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। किसी से भी हमें कटु वचन नहीं बोलना चाहिए। ईश्वर की भक्ति हमें स्थिर मन से करना चाहिए। हमें अपना स्वभाव शांत रखना चाहिए और सभी को समान भाव से देखना चाहिए।

प्रश्न-12 कबीर घास की निंदा करने से क्यों मना करते हैं। पढ़े हुए दोहे के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – कबीरदास जी के अनुसार हमें कभी भी अहंकार वश किसी भी वस्तु को निम्न समझकर उसकी निंदा नहीं करनी चाहिए क्योंकि समय आने पर वही छोटी वस्तु बड़े कष्ट का कारण बन सकती है। हर एक में कुछ न कुछ अच्छाई होती है। अतः हमें सबका सम्मान करना चाहिए।

प्रश्न-13 'तलवार का महत्व होता है म्यान का नहीं'-उक्त उदाहरण से कबीर क्या कहना चाहते हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – 'तलवार का महत्व होता है, म्यान का नहीं' से कबीर यह कहना चाहता है कि हमें किसी भी वस्तु के आंतरिक गुणों को महत्व देना चाहिए नाकि बाहरी सुंदरता को। उसी प्रकार किसी व्यक्ति की पहचान उसके गुणों एवं ज्ञान से होती है नाकि कुल, जाति, धर्म आदि से। ज्ञान के आगे जाति का कोई अस्तित्व नहीं है।

प्रश्न-11 पाठ की तीसरी साखी-जिसकी एक पंक्ति है 'मनुवाँ तो दहुँ दिसि फिरै, यह तो सुमिरन नाहिं' के द्वारा कबीर क्या कहना चाहते हैं?

उत्तर – इस पंक्ति के द्वारा संत कबीर जी कहते हैं कि केवल मुख से हरी का जाप करने से या हाथ में माला फेरने मात्र से ही ईश्वर का स्मरण नहीं होता है। यदि हमारा मन चारों दिशाओं में भटक रहा है और मुख से हरि का नाम ले रहे हैं तो वह सच्ची भक्ति नहीं है। ईश्वर की सच्ची भक्ति तो मन को स्थिर रखकर भगवान का सुमिरन करते हुए ही संभव है।